International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 444-445

अलाउद्दीन का राजस्व एवं बाजार नियंत्रण सम्बन्धी व्यवस्था

डॉ0 केशरी नंदन मिश्र

एसो0 प्रोफेसर (इतिहास) हेमवती नन्दन बहुगुणा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नैनी, इलाहाबाद उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

अलाउद्दीन के काल में संस्कृत का एक लेख प्राप्त हुआ जिसमें इसे 'युग का चरवाहा' कहा गया। अलाउद्दीन का राजस्व सिद्धान्त बलबन की तरह प्रतिष्ठा, शक्ति और न्याय पर आधारित था। बलवन की तरह अलाउद्दीन की प्रतिष्ठा झूठी शान पर आधारित नही थी बल्कि यह आम जनता पर आधारित प्रतिष्ठा थी क्योंकि वह स्वयं कहता था कि मैं वही कार्य करता हूँ जो राज्य के हित में है मुझें यह नही मालूम कि शरा में इसकी अनुमति है या नही। मुझे यह भी नही मालूम कि अल्लाह मेरे अंतिम दिनो मं मेरे साथ कैसा न्याय करेगे। इस प्रकार उसने धर्म निरपेक्ष राज्य की स्थापना की। उसने पहली बार एक स्थायी सेना (खड़ी सेना (Standing Army) का गठन किया। उसने सैनिको का हुलिया, घोड़ो को दागने और सैनिको को नगद वेतन देने की शुरूआत की उसके समय में सल्तनत काल की सबसे बड़ी सेना (4 लाख 75 हजार कीद्ध गठित की गयी। इस सेना का गठन मध्य एशिया की मंगोलो की दशमलव प्रणाली पर आधारित था।

10 सैनिक = 1 सर–ए–खेल
10 सर–ए–खेल = 1 सिपहसालार
10 सिपहसालार = 1 अमीर
10 अमीर = 1 मलिक
10 मलिक = 1 खान

उसने गुप्तचर व्यवस्था को संगठित किया तथा बरीद की सहायता के लिए मकुनहियन की नियुक्ति की। अलाउद्दीन ने पहली बार डाक व्यवस्था की शुरूआत की जिसमे की घोड़ो के माध्यम से सूचनाये एक स्थान से दूसरे स्थान पर तेजी से भेजी जा सके।अलाउद्दीन बलबन की भाँति न्याय के किसी भी हस्तक्षेप को स्वीकार नही करता था उसका भी मानना था कि राजा का कोई सगा–सम्बन्धी नही होता है।

अलाउद्दीन की सबसे बड़ी उपलब्धि उसके आर्थिक सुधार है जिसे मुख्यतः दो भागों मे राजस्व सुधार और बाजार नियंत्रण नीति में विभाजित किया जाता है– (क) राजस्व सुधारः अलाउद्दीन ने राज्य की आय को बढ़ाने के लिए निम्नलिखित महत्वपूर्ण कार्य किये :–

1. जिन लोगो को मिल्क, इनामा और वक्फ के रूप मे जमीने दी गयी थी उन्हे उनसे वापस लेकर राज्य की भूमि या खलासा भूमि परिवर्तित कर दिया गया।
2. उसने दो नये कर धरी कर और चरी कर लगाये धरी कर मकानो पर जबकि चरी कर चारागाहो एवं दुधारू पशुओं पर लगाये गये।
3. उसने सैनिको के लूट के हिस्से (Khums (खम्स) में 80% हिस्सा स्वयं जबकि 20% हिस्सा सैनिको को दिया यद्यपि कुरान ने इसका 80% हिस्सा सेना को देने की बात कही गयी।

भू–राजस्व सुधार : अलाउद्दीन के राजस्व सुधारो में सबसे महत्वपूर्ण उसका भू–राजस्व सुधार था उसने पहली बार भूमि की माप बिस्वा में करवायी तथा खूतो (जमीदारो) मुकद्दमो (मुखियाओं) और बलाहारो (किसान) के विशेषाधिकार वापस ले लिये तथा सीधे कृषकों से भ–राजस्व वसूल किया गया भू–राजस्व की मात्रा 50% थी या ½ भाग था। यदि उसमे धरीकर चरीकर आदि को मिला जाय तो मात्रा 75–80% तक हो जाती थी। अलाउद्दीन की यह भू–राजस्व व्यवस्था आगे चलकर क्रमशः सिकन्दर लोदी, शेरशाह सूरी और अकबर की भू–राजस्व व्यवस्था का आधार बनी।

(ख) बाजार नियंत्रण नीति : अलाउद्दीन के पास सबसे बड़ी सेना थी उसके पास 50 हजार दास भी थे। एक विद्वान मोरबोल्ड ने अनुमान लगाया कि ''यदि इस सेना को सामान्य वेतन ही दिया जाता तो भी खजाना 5 वर्षो में खाली हो जाता''। अतः अलाउद्दीन ने सैनिको के वेतन को कम करने का निश्चय किया परन्तु वे किसी अव्यवस्था के शिकार न हो जाये इसके लिए उनके उपयोग की वस्तुओं के दाम उसने कम और निश्चित कर दिये उसकी यह नीति ही बाजार नियंत्रण नीति के नाम से जानी जाती है। इस प्रकार इसका मुख्य उद्देश्य एक बड़ी सेना रखना था।

विद्वानो में इस बात को लेकर मतभेद है कि अलाउद्दीन बाजार नियंत्रण नीति केवल दिल्ली में लागू थी या उसके सम्पूर्ण क्षेत्र में बरती और मोरलैण्ड के अध्ययनों से पता चलता है कि यह केवल दिल्ली में ही लागू थी परन्तु कुछ आधुनिक विद्वानो ने प्रश्न किया सेना क्या केवल दिल्ली में ही थी अतः अब कहा जाता है कि उसने इसे अपने सम्पूर्ण राज्य क्षेत्र में लागू कराने की कोशिश की परन्तु उसे सफलता केवल दिल्ली मे मिली।

बाजार नियंत्रण नीति से सम्बन्धित विभाग और अधिकारी

अलाउद्दीन ने अपनी बाजार नियंत्रण नीति को सफल बनाने के कुछ नये विभाग और अधिकारियों की नियुक्ति की –

1. दीवाने रियासत – यह वित्त विभाग या इसके अधीन बाजार नियंत्रण नीति था।
2. शहना–ए–मंडी – गल्ला बाजार का अधीक्षक इस पद पर मलिक कबूल उलुगखनी की नियुक्ति की गयी।
3. वरीद एवं मुनहियन – गुप्तचर।
4. परवाना नवीस – परमिट जारी करने वाला अधिकारी।
5. नाजिर – माप–तौल का अधिकारी।
6. मुहतसिब – लोगों के आचरण पर नजर रखने वाला अधिकारी या सेंसर का अधिकारी।

इनके दरोगा–ए–मण्डी और कोतवाल शामिल नही थे।

चार बाजार : अलाउद्दीन ने बाजार नियंत्रण नीति को सफल बनाने के लिए कुल चार बाजार स्थापित किये –

1. गल्ला बाजार।
2. साराय–ए–अदल।
3. घोड़ो दासो और मवेशियों का बाजार।
4. सामान्य बाजार।

गल्ला बाजार : अलाउद्दीन ने धुमक्कड़ व्यापारियों के माध्यम से सारा गल्ला उनसे खरीद कर दिल्ली मे स्थापित स्थायी व्यापारियों को दे दिया जाता था और वहाँ उसे बेचा जाता था इसके लिए अलाउद्दीन ने कुल 8 अधिनियम जारी किये इसमें –

- प्रथम अधिनियम सभी प्रकार के फसलों के दाम निश्चित करने से सम्बन्धित था – जैसे – गेहूँ – 7½ जीतल प्रति मन, चावल, दाल, चना – 5 जीतल प्रति मन, जौ – 4 जीतल प्रति मन
- इसका पाँचवा अधिनियम जमाखोरो से सम्बन्धित था।
- इसका आठवाँ अधिनियम आकाल आदि के समय राशनिंग व्यवस्था अर्थात् सार्वजनिक वितरण प्रणाली से सम्बन्धित था।

बरनी लिखता है कि उसके 20 वर्षो के शासन काल मे वस्तुओ के न तो दाम बढ़ ओर न ही घटे। वह इसे मध्य युग का चमत्कार मानता है।

(II) सराय–ए–सदल : इसका शाब्दिक अर्थ न्याय का स्थान है परन्तु यह अलाउद्दीन द्वारा दिल्ली में बदायूँ द्वार के निकट दूसरा बाजार था। जिसे सरकार द्वारा अनुदान भी प्राप्त था इसमे बनी–बनायी वस्तुएं बिकने के लिए आती थी। जैसे– कपड़ा तेल, मोमबत्ती, शर्कर आदि। परन्तु यह व्यापार उतना सफल नहीं रहे।

(III) घोड़ो, दासो एवं मवेशियो का बाजार : इसमे अच्छी किस्म के घोड़े 100–120 टंक, मध्यम किस्म के घोड़े 80–90 टंक और निम्न किस्म के घोड़े 60–70 टंक के बीच मिलते थे। इसी प्रकार दास–दासियाँ 40–50 टंको में मिल जाती थी यद्यपि उनकी कीमत गुणवत्ता पर आधारित था। मवेशियों में भेंड़ बकरे 10–15 जीतल में, जबकि भैंस आदि 25–30 जीतल में मिल जाते थे।

(IV) सामान्य बाजार : यह अलाउद्दीन द्वारा स्थापित चौथा व अन्तिम बाजार था इसमे रोजमर्रा की वस्तुएँ जैसे– मिठाई, सब्जी, जूता–चप्पल आदि बिकने के लिए आते थे। इसके भी दाम निश्चित थे। अलाउद्दीन के आर्थिक सुधार व इसकी बाजार नियंत्रण नीति उसके अपने उद्देश्यों में सफल रहे वह एक बड़ी सेना द्वारा सम्पूर्ण भारत पर विजिट करना चाहता था। जिसमें वह सफल रहा। जब इब्नवतूता दिल्ली आया तब उसने अलाउद्दीन द्वारा संचित चावल खाया। परन्तु उसके आर्थिक सुधार सामान्य आर्थिक सिद्धान्तों के प्रतिकूल थे। कोई भी किसान अपना 80% देकर कैसे इन सुधारो की वकालत कर सकता था। इसलिए डा0 ताराचन्द्र ने लिखा– ''कि उसने सोने का अंडा देने वाली मुर्गी को ही मार डाला''।

इसीलिए अलाउद्दीन के बाद किसी अन्य शासक ने इसे नही अपनाया तथा ग्यासुद्दीन तुगलक ने गद्दी पर बैठते ही उसके आर्थिक सुधारों को पलट कर पुरानी व्यवस्था को पुनः लागू कर दिया। इन्ही परिस्थितियों में अलाउद्दीन की जलोदकर (पेचिस) रोग से मृत्यु हो गयी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. द्विजेन्द्र नारायण झा, कृष्ण मोहन श्रीमाली, प्राचीन भारत में इतिहास 2005 ।
2. मनोज सिन्हा, समकालीन भारत : एक परिचय, 2014।
3. बी0एल0 गोवर, अलका मेहता एवं यश पाल : आधुनिक भारत का इतिहासः एक नवीन मूल्यांकन, 2014।
4. एस0के0 पाण्डेय : आधुनिक भारत, 2014।
5. एस0के0 पाण्डेय : मध्यकालीन भारत, 2014।